E-ISSN: 2455-1511

Sanskruti International Multidisciplinary Research Journal

URL:ww.simrj.org.in Journal UOI:1.01/simrj

Volume IV Issue I Jul-Aug-Sep 2018

Editor-in-Chief
SANTOSH RONGALE

SANSKRUTI INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL
Journal homepage: http://www.simrj.org.in Journal UOI: 1.01/simrj

"माध्यमिक स्तर के दिव्यांग बालाकों की अध्ययन आदतों, सृजनात्मकता एवं समायोजन का अध्ययनः राजस्थान के सीकर जिले के संदर्भ में "

डॉ. भाबग्राही प्रधान[1*] सुरेन्द्र कुमार[2]

१.शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, (शिक्षा विभाग) जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू राजस्थान

२.शोध छात्र, (शिक्षा विभाग) जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनू राजस्थान

*Corresponding author Email- bpjvbu@gmail.com

प्रस्तावना

शिक्षा समग्र जीवन के उन्नयन की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह मानव समाज के सर्वांगीण विकास में प्राण फूंकती है और जीवन के क्रम को समुन्नत एवं सर्वहिताय बनाती है। जीवन को सरस सुमधुर एवं सर्वोपयोगी बनाने में शिक्षा महत्ती भूमिका निभाती है। सार रूप में अगर कहें तो कहना होगा कि शिक्षा ही जीवन है। गीता के उद्घोष "सा विद्या या विमुक्तये" की प्रासंगिकता में शिक्षा जीवन को जीने योग्य बनाती है तथा समस्त बंधनों से विमुक्त करती है। समग्र की प्राप्ति एवं साथ ही साथ सर्व से मुक्त होना यही जीवन को आनन्द पूर्ण बनाता है।

विभिन्न क्षमताओं के विकास के लिए विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों में बालक की सहभागिता आवश्यक है। 'ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार ज्ञान के बहुत सारे स्वरूप हैं और विभिन्न स्थानो पर ये प्राप्त होते हैं। सूचनाओं के माध्यम से, बौद्धिकता और अनुभव से प्राप्त होते हैं शैक्षिक संस्थाओं, अध्यापकों और पुस्तकालयों के माध्यम से प्राप्त होते हैं तथा बहुत से काम करने वालों, कला चित्रण से, दुकानों से, दस्तकारों से ज्ञान प्राप्त होता है हमारे वातावरण में ज्ञान का अपार भण्डार छिपा होता है इसलिए विद्यार्थियों का कई तरह से मूल्यांकन किया जाता है, इसलिए उनका सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन किया जाता है।शिक्षा को प्रायः दो भागोंमें विभाजित किया गया है –अनौपचारिक और औपचारिक। अनौपचारिक शिक्षा एक बालक को अपने परिवार से मिलती है। माता–पिता व परिवार के अन्य सदस्य अपने–अपने सांस्कृतिक व्यवहारों से बालक में सांस्कृतिक गुण उत्पन्न करते हैं और व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

महात्मा गांधी ने 13 जुलाई 1937 के 'हरिजन' मे शिक्षा के संबंध मे लिखा है–

राष्ट्र के रूप में हम शिक्षा में इतने पिछडे हुए है कि यदि हमने शिक्षा का यह कार्यक्रम धन पर आधारित किया, तो हम राष्ट्र के प्रति शिक्षा के अपने कर्तव्य को इस एक पीढ़ी में एक निश्चित समय में पूर्ण करने की आशा नही कर सकते हैं। अतः मैनें यह प्रस्ताव करने का साहस किया है कि शिक्षा